. दिनांक 4 सितम्बर, 1984

से थी. पि.सिनिपत 88-84/33791 - पंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. महेशा युड प्रोडक्टस प्रा. लि., खेवड़ा वहातगढ़ (सीनोपत), के श्रीमक, श्री फूल चन्द तथा उसके प्रवत्यकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है कि के श्रीमक श्रीदेश

्रिश्च और विकि हिर्सिणी के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं :

इसलिए, ग्रेब, भीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की ग्रारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों की प्रयोग करते हुए हरियोगी के राज्यात इसके द्वारा सरकारी ग्रीधमूचना सं 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नयम्बर, 1970, से संख्यातित स्रिकारी ग्रीधमूचना सं 3864-ए-एस. ग्री. (ई)-श्रम/70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त ग्रीधिनयम की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादगस्त या उससे मुसंगत या उसरों सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निद्धित करते हैं, जो कि उक्त प्रवृद्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त गामला है या उक्त विवाद से मुसंगत ग्रायवा संबंधित मामला है:

क्या श्री फूल चन्द्र की सेवांग्री का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

गं. त्री वि./सोनीपत/88-84/33798 — चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. महेश बुड प्रोडक्टस प्रा. लि., खेवहां बहालगढ़ (सोनीपत), के अमिक श्री राम प्रेर तथा उसके प्रवत्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई बोहोगिक विवाद है;

भौर चूकि हिर्याणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

मिनियाँ, मिनियाँ, किनियाँ, 1947, नी घारी 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई मिनियाँ, 1947, नी घारी 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई मिनियाँ, मिनियाँ, का मिनियाँ, मिनियाँ,

क्या श्री राम फरे की सुवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्री वि/सोनी पूर्त (88/84/33805 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में. महेश वुड प्रोडक्टरा प्रा. ति., खेवड़ा वहालगढ़ (रोनी ति) के अमिक श्री राम पाद तथा उसके प्रवत्यकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भोधोपिक विवाद है;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अत्र औद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिनियम प्रयोग का प्रयोग करते हुये हिर्याणों के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं॰ 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्तर 1970, के प्रयोग पिठत परकारी अधिसूचना गं, 3864-ए.एस शोई. श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारी के प्रयोग गिठत श्रम वायालय की हितक, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला प्राथिनियम की दिन्द करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रामक के वीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत वाससम्बन्धित भागना है शा उक्त विवाद से सुसंगत वाससम्बन्धित भागना है शा उक्त विवाद से सुसंगत

क्या श्री राम चन्द्र को सेवाश्रों का समापन न्यायोजित तथा ठिक है ? यदि नहीं, तो वह िंगस राहत का हकदार है ? कि प्रतिकृति के श्री के श्री के श्री के श्री के श्री के स्वाप के स्वाप की स्वाप की स्वाप की स्वाप वह प्रोडन्ट्स था. लि., बिन है विहिताब की स्वाप है कि मैं अपने वह प्रोडन्ट्स था. लि., बिन है विहिताब से सो विह स्वाप की स्वाप इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई

परिक्रिक हिर्देश कि कि प्रतिविधान विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, श्रीकोगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिवनयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 964 1-1-श्रम/70/32573 दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रीधसूचना सं० 3864-ए०एस० श्री०ई० श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रीधनियम की घारा 7 के श्रीचन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा गामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या नो विवादशस्त मामला है या उन्त विवाद से सुसंगत या सबंधित मामला है :---

क्या श्री राम श्रीतार की सेवाग्नों का समाधन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, ती वह किस राहत का हकदार है?

सं अप्रोविव /सोनीपत / 88-84 / 33819. चृकि हरियाण के राज्यपाल की राय है कि मैंव महेश वूड प्रोडक्स प्राव लिव, खेवड़ा, बहालगढ़, (गोनीपत) के श्रमिक श्री फिरतू तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

मीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्शय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, ग्रोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुई, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-अम 70/32573 दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं 3864-ए. एस. श्रो.ई. अम-70/13648 दिनांक 8 गई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे निखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :--

क्या श्री फिरतू की सेवाघों का समापन न्यायोंचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो०नि०/सोनीपत/88-84/33826.— वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० महैश वृड श्रोडवटस श्रा० लि०, खेवड़ा, ब्रहालगढ़, (गोनीपत) के श्रीमक श्री मुन्ना लाल तथा उसकें प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीशोगिक विवाद है :

मीर मंकि हरियाण, के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, श्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा गरकारी श्रीधमूचना सं० 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 197 के साथ पठित सरकारी प्रधिसूचना सं० 3864-ए०एस०ओ विवाद प्रस्त न्या पठित सरकारी प्रधिसूचना सं० 3864-ए०एस०ओ विवाद प्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के वीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित है :--

क्या श्री मुन्ता लाल की सवाओं का समापन न्यायोजित श्रया, ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 10 सितम्बरं, 1984

सं श्रो विव विम्ता/49-84/34548 --चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं के श्रोधरन वर्कस प्राव लिव, यमुनानगर के श्रमिक श्री श्रणोक कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री द्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विनाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, प्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्राधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रधान की विवाद श्राधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रधान की विवाद से प्रधान की प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधम् चना सं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैं लं, 1984 द्वारा उपन श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम ग्यायालय, श्रम्बाला को विवाद प्रस्त या उससे संबंधिन नीचे लिखा मामला ग्यायानिर्णय के लिये निर्देश्य करते हैं, जो कि उस्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के नीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रायवा संबंधित मामला है:—

स्या श्री अशोक कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

> एस० के० महेश्वरी, संयुक्त सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।